1

स्वच्छंद प्यार

पाठ-परिचय

प्रस्तुत **कविता** में कवि ने आगे बढ़ते रहने को ही 'ज़िंदगी' का वास्तविक रूप माना है। मानव जीवन में परस्पर सहयोग करना, सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना तथा सुख-दुख, दोनों में ही समान भाव से जीने की शिक्षा दी गई है।

1.

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले।
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले!
आए बन कर उल्लास अभी
आँसू बन कर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे
तुम कैसे आए, कहाँ चले?

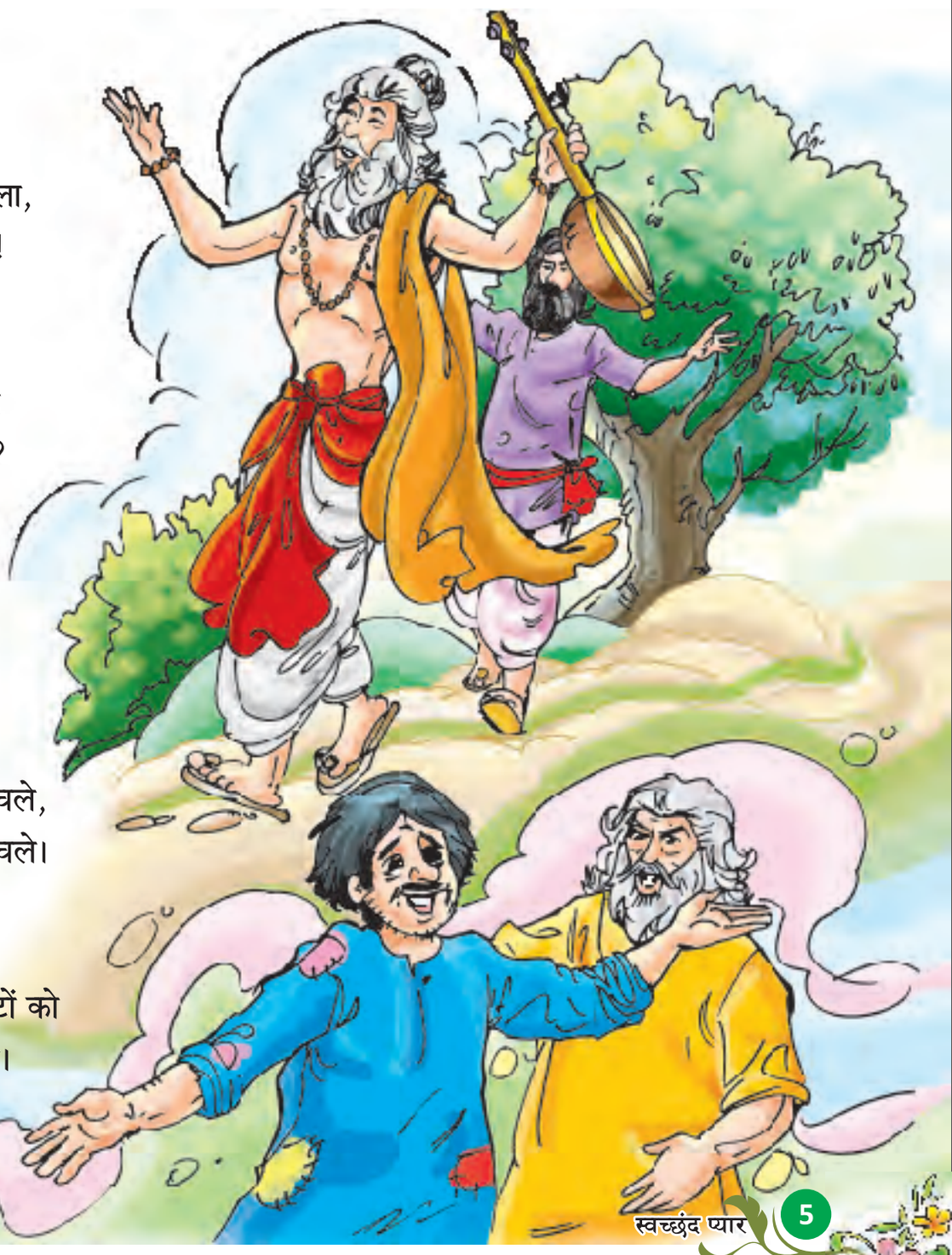

2.

किस ओर चले? यह मत पूछो
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले।
दो बात कही, दो बात सुनीं,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छक कर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

3.

हम भिखमंगों की दुनिया में
स्वच्छंद लुटा कर प्यार चले,
हम एक निशानी-सी उर पर
ले असफलता का भार चले।
हम मान रहित, अपमान रहित
जी भर कर खुलकर खेल चुके।
हम हँसते-हँसते आज यहाँ
प्राणों की बाजी हार चले।
हम भला बुरा सब भूल चुके,
नत मस्तक हो मुख मोड़ चले,
अभिशाप उठा कर होठों पर
वरदान दृगों से छोड़ चले,
अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकने वाले!
हम स्वयं बँधे थे, और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

—भगवतीचरण वर्मा

जीवन-परिचय

भगवतीचरण वर्मा
(1903-1981)

भगवतीचरण वर्मा का जन्म शफीपुर, जिला उन्नाव में 30 अगस्त, 1903 में हुआ था। शिक्षा पूरी करने के बाद इन्होंने वकालत की लेकिन बाद में फिल्म, आकाशवाणी और संपादन कार्य से जुड़ गए। वर्मा जी ने अनेक उपन्यास लिखे हैं। 'चित्रलेखा' उपन्यास पर बनी फिल्म से इन्हें अत्यधिक ख्याति मिली।

सन् 1961 ई० में उनको 'भूले-बिसरे चित्र' महाकाव्य के लिए 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला। साथ ही, 1971 में भारत का सर्वोच्च सम्मान 'पद्मभूषण' भी उनको प्राप्त हुआ और 1978 में वे राज्य सभा के लिए मनोनीत हुए।

'मधुकरण', 'प्रेम-संगीत', 'मानव', 'रंगों से मोह', 'पतन', 'चित्रलेखा', 'तीन वर्ष', 'दो बाँके', 'एक दिन', 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते', 'हमारी उलझन', 'भूले-बिसरे चित्र' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

5 अक्तूबर, 1981 को इनका निधन हो गया।

शब्द-संपदा

आलम = संसार। **उल्लास** = खुशी। **जग** = संसार। **स्वच्छंद** = बंधन रहित। **असफलता** = हार। **अपमान** = बेइज़्ज़ती। मस्तक = माथा। **अभिशाप** = श्राप। **दृग** = आँख। **स्वयं** = खुद, अपने आप।

अभ्यास प्रश्न

कविता से .....

1. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए :

क. आज यहाँ और कल वहाँ कौन हो सकता है?

(i) हस्ती ☐ (ii) दीवाना ☐ (iii) मनुष्य ☐ (iv) मस्ती ☐

ख. धूल उड़ाते हुए साथ-साथ कौन चलता है?

(i) हस्ती ☐ (ii) मस्ती ☐ (iii) मनुष्य ☐ (iv) दीवाना ☐

ग. किसका कुछ लिए और किसको अपना कुछ दिए बिना दीवाना सिर्फ़ चलता रहता है?

(i) उसका ☐ (ii) जग ☐ (iii) अपना ☐ (iv) मनुष्य ☐

घ. दीवाना किस चीज़ को छककर पीता है?

(i) आँसू ☐ (ii) भाव ☐ (iii) सुख-दुख ☐ (iv) जग ☐

ङ. इस कविता में प्राणों की बाजी किस प्रकार लगाते हैं?

(i) स्वच्छंद लुटाकर ☐ (ii) असफल होकर ☐ (iii) हँसते-हँसते ☐ (iv) दुखपूर्वक ☐

2. दिए प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए :

क. दीवानों का जग के साथ कैसा व्यवहार होता है?

ख. 'दीवाने मान-अपमान की भावना से ऊपर होते हैं'—कैसे?

ग. 'स्वच्छंद प्यार' से कवि का क्या आशय है?

घ. कवि के हृदय पर क्या भार है?

ङ. प्राणों की बाजी हारने से कवि का क्या तात्पर्य है?

3. दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट करके लिखिए :

क. मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले!

ख. जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले।

ग. हम हँसते-हँसते आज यहाँ
प्राणों की बाजी हार चले।

घ. हम स्वयं बँधे थे, और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

4. सप्रसंग भावार्थ लिखिए :

किस ओर चले? यह मत पूछो
चलना है, बस इसलिए चले,

जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले।
दो बात कही, दो बात सुनीं,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छक कर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

भाषा से.....

1. भाववाचक संज्ञाएँ लिखिए :

उल्लास – _____ असफलता – _____ मस्ती – _____ सुख – _____

हँसी – _____ भला – _____ दुख – _____ बुरा – _____

2. विलोम शब्द लिखिए :

हँसना × _____ सफलता × _____ सुख × _____ भला × _____

प्यार × _____ अभिशाप × _____ अपना × _____ मान × _____

3. तुकांत शब्द लिखिए :

लिए – _____ रोए – _____ मोड़ – _____ भार – _____

1. भगवतीचरण वर्मा की अन्य कविताएँ ढूँढ़कर पढ़िए।
2. जीवन में 'उल्लास और मौज-मस्ती' पर एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए।